Adhyatmaopnishad

Folder No.	022238
Granth Name	Adhyatmaopnishad
Author	Vikramsenvijay
Publisher	Labdhi Bhuvan Jain Sahitya Sadan
Edition	1
Year	2010
Pages	178

अध्यात्मोपनिषद्

फोल्डर नं.	०२२२३८
ग्रन्थ	अध्यात्मोपनिषद्
लेखक	विक्रमसेनविजय
प्रकाशक	लब्धि भुवन जैन साहित्य सदन
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२०१०
पृष्ठ	१७८

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय ---------- ३
समर्पणम् ---------- ५
उपनिषद् टीकाने उल्लसित वदने आवकार ---------- ६
विषयानुक्रम ---------- १३
प्रथम शास्त्रयोगशुद्धि अधिकार ---------- १
मंगलाचरण ---------- १
अर्हन्नमस्काररूपमङ्गलाचरणेन सह ग्रन्थनाम्नैव विषयादिनिदर्शनम् ---------- २
हस्तस्पर्शसमं ज्ञानं शास्त्रज्ञानं तद्व्यवहारकृत ---------- ११
प्रथमा शास्त्रस्य कषनामकपरीक्षा ---------- १६
स्वरूपतो निरवद्यकर्म चित्तशुद्धिकारणण् ---------- २२
अनेकान्ते बौद्ध संमतिमाविष्करोति ---------- ३४
अनित्यैकान्तपक्षे हिंसादिकमयुक्तम् ---------- ४१
माध्यस्थ्यमेव शास्त्रार्थरूपधर्मवाद ---------- ५१
अध्यात्मपूतात्मनोनेकान्ते शास्त्रे विकस्वरभक्तिर्भवति---------- ५५
ज्ञानयोगशुद्धिनामा द्वितियोधिकार ---------- ५७
ज्ञानयोगं स्वजीवने प्रतिदिनं प्रयुञ्जीत ---------- ५७
स्वभावचिन्तनद्वारोपनता विषयास्त्यागधर्मायैव ---------- ६१
विशुद्धानुभवं विना परं ब्रह्मागम्यमस्ति ---------- ७१
आत्मा पुद्गलभावरूपजगतःकर्त्ताऽस्ति वा न वा ---------- ८१
तथा चोक्तं परैरपि तीर्थान्तरीयैरप्येवमेव चोक्तमस्ति तथाहि ---------- ९१
परमज्ञानयोगी तीर्थंकरो वा गणधरादिर्यति पति र्भवति ---------- ९७
तृतीय क्रियायोगाशुद्धिनामकाधिकार ---------- ९९
साधकसिद्धयोर्मध्ये साधनलक्षणयो र्भेदाभाव कथं ---------- ९९

पश्यकविशेषस्य शास्त्रं नियामकं न युक्तम्---------- १०४
अज्ञान नाशकं ज्ञानमात्रं न क्रियापि ---------- १११
ज्ञानस्य परिपाकजन्यक्रियासङ्गक्रिया भवति ---------- १२०
उपसंहारे विशिष्टमहामंगलरूपमुनीन्द्राणां श्लोकद्वयं गीयते ---------- १२३
चतुर्थ साम्ययोगशुद्धिनामाधिकार ---------- १२५
ज्ञाननामक्रियानामकघोटकद्वययुक्तसाम्यरथा ---------- १२५
एकविवेकगर्भितविकसितसमतादरणीया भरतादिभूपेन्द्रवत् ---------- १३१
साम्ययोगशुद्धइनामकचतुर्थाधिकारस्योपसंहार ---------- १३९
प्रशस्ति ---------- १४०
परिशिष्ट-गाथा अकारादिक्रम ---------- १४२